राजस्थान के सांस्कृतिक इतिहास में – मनोंरजन का योगदान

ललित कुमार पंवार

शोध सारांश

मानव जीवन के कैनवास पर संस्कृति के पल्लवित होते रंगों से जब हृदय में आनन्द उत्पन्न होता हैं तो वही आनन्द आंखो में दृश्य व पावों में नृत्य बनता हैं तथा कंठ में गीत बनकर उभरता हैं जिससे मानव मन हर्ष व उल्लास से रंजित होता हैं इसी रंजन को मनोरंजन नाम दिया है।

परिचय

राजस्थानी संस्कृति में जिस प्रकार व्यक्ति, समुदाय व समाज एक–दुसरे से निर्मित व जुड़े हैं, ठीक उसी प्रकार मनोरंजन भी मानव जीवन का अपरिहार्य हिस्सा बनकर संस्कृति के मुख्य रंगों में समाविष्ट है तथा मानव को रोचक बनाने के एक मात्र विकल्प के रूप में सामुहिक व समवेत जीवन का परिचायक है। इसी के माध्यम से जगत परिप्लावित था व हैं और रहेगा। प्राचीन परिदृश्य में मनोरंजन साधनों के शनै–शनै विकसित व परिवर्तित होने से संस्कृति में हमें नये आयाम आभासित होने लगे और मानव जीवन का यह क्षेत्र अति व्यापक होता गया।

जैसा कि अर्वाचीन युग में शैल चित्रों में नृत्य करती हुई गणिकाओं के चित्र व सैंधव मुद्राओं में नृत्य का अंकन (चित्रण), वही वैदिक युग में आखेट, मल्लयुद्ध, चौपड़पाशा, दौड़, प्रतियोगिताओं ने इसमें नये तत्वों का समावेश किया साथ ही देवी देवताओं द्वारा ग्रहण किये गये वाद्ययंत्रो तथा सामवेद में यज्ञों में सूक्तों व ऋचाओं का गायन, मनोरंजन व संस्कृति का धर्म व अध्यात्म से जोड़कर इसके स्तर को गरिमामय बनाता है।

अतीत में राजतंत्र था और सांस्कृतिक पहलू राजा के इर्द–गिर्द व उन पर निर्भर रहता था और जनता, राजा के इच्छानुसार ही अपना मनोरंजन करती थी जैसे आखेट परम्परा राजा के लिए होती थी वहीं उसकी अभिरूचि के अनुसार मल्ल, युद्ध, पशुपक्षी लड़ाई तथा मुर्गा, तीतर, बाज, बटेर सांड की लड़ाई का आयोजन होता जिसमें जनता भी दर्शकों के रूप में अपना मनोरंजन करती, वहीं रथदौड़, घुड़दौड़, बैलदौड़, आदि विभिन्न गतिमय आनन्द के साधन थे जो कि अपनी सांस्कृतिक चारित्रिकता को दर्शाता हैं और अपने–अपने क्षेत्रों की विशिष्टता अभिव्यक्त करते है।

इसके बाद मनोरंजन काल–यज्ञों, कर्मकाण्डों में गान, तीज त्यौहार सार्वजनिक उत्सव आदि में दृष्टिगोचर होता है जिसका प्रारम्भ तो सामवेद से ही हो गया था जिसमें अवाम् की सक्रिय सहभागिता झलकती थी जो कि सामाजिक सद्भावना एकता व संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण था।

मन के रंजन का पक्ष दरबारी राग–रंग, सोमरस, पान, घूत, क्रीड़ा, गणिकाओं, रूपाजीवाओं के नृत्य कौशल पर भी आधारित था जो कि राजा या उच्च वर्ग की परिधि में ही होता था और इसे निजी भी रखा जाता था तत्पश्चात् यही पक्ष अवाम् तक पहुंचने लगा साथ ही नाटक, तमाशा व कथा मंचनों से पौराणिक व तत्कालीन किवदन्तियां और

कहानियां आदि से क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशिष्ठताओं का दर्शन भी होता जैसे तमाशा जयपुर का अलवर का खेल, चंग–नृत्य, मारवाड़ की गैर व घूमर आदि।

इसी दौर में राजपूताने के कई राजा भी अपनी अपनी अभिरूचियों के लिए प्रसिद्ध रहे है जैसे मेवाड़ महाराणा कुम्भा का राग रंग या संगीत प्रेम उनके द्वारा लिखित संगीत रत्नाकार, संगीत मीमांसा नामक कृतियों से दर्शित होता हैं वही अजमेर शासक पृथ्वीराज चौहान द्वारा शब्द भेदी बाण चलाना और चित्तौड़ राणा रतनसिंह का सौन्दर्य प्रेम वही प्रताप का मल्लयुद्ध प्रेम इत्यादि सारी बातें राजस्थान की संस्कृति को सरोकार करती है और साहित्य के विभिन्न रसों का स्वादान करती है जो कि अन्यत्र बहुत कम सुनने को मिलता है।

शनै–शनै कविचन्द्रबरदाई, पीथल व मुहणोत नैणसी जैसे रचनाकारों ने अपनी कृतियों में शिक्षा तथा अध्यात्म व मनोरंजन को सुमेलित कर मानव जीवन के नैतिक आदर्शो को शिखर पर विराजित कर इसमें सजीवता व मौलिकता को प्रमाणित कर हमारी संस्कृति में समाविष्ट किया है और राजस्थान का सांस्कृतिक विकास किया है।

इसी प्रकार अपनी संस्कृति पर मनोरंजन का राजनैतिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है तथा इससे राज्य की स्थिति व सम्पन्नता का पता लगता है और राजा व प्रजा की अभिरूचियां स्पष्ट होती हैं साथ ही इसके माध्यम से सामाजिकता व सौहार्द की स्थिति बनती हैं और यह साधन इतिहास के कालक्रम में भी सहायक होते। निश्चिततः मनोरंजन प्रदेश की सांस्कृतिक विशिष्टता के शिखर पर हैं और संस्कृति आधार स्तम्भ हैं।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. अद्रिस बनर्जी – आर्कियोलाजिकल हिस्ट्री ऑफ साउथ ईस्टर्न राज.
2. डॉ. दशरथ शर्मा – राज. थ्रु द एजेज अप टू 1000 ई.
3. डॉ. गोपीनाथ शर्मा – राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास
4. डॉ. जयसिंह नीरज – राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा
5. पृथ्वीराज मेहता – हमारा राजस्थान
6. वी.एन. मिश्रा – पोलियोलिथिक कल्चर ऑफ वेस्टर्न राजपुताना
7. शर्मा व पाया – राजस्थान इतिहास
8. डॉ. एम. एस. जैन – राजस्थान थ्रु दी एजेज वाल्यूम–3
9. डॉ. जे. के. ओझा – मेवाड़ का इतिहास